Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 5 | ISSN : 2581- 6306

भारत का अभ्युदय

Kirit Debnath,
Senior Research Scholar,
Department of Hindi
Presidency University, Kolkata,
India

Article Info

Volume 3, Issue 5

Page Number: 21-28

Publication Issue :

September-October-2020

Article History

Accepted : 10 Sep 2020

Published : 23 Sep 2020

शोध आलेख सार

इस आलेख में मैंने भारत के प्रख्यात अयाचक ऋषि अखंडमंडलेश्वर श्री श्री स्वामी स्वरूपानंद परमहंस देव (श्री श्री बाबामणि) के ब्रह्मचर्य और स्वदेश की सेवा, ब्रह्मचर्य और अन्य धर्मों आदि प्रति सहिष्णुता आदि पर उनके विचारों की आलोचना की है।

मुख्य शब्द – ब्रह्मचर्य, आधुनिकता, अभ्युदय।

भूमिका :- भारत की जागृति में ब्रह्मचर्य, विधा :- आलोचनात्मक

आज हम एक आधुनिक भारत में जी रहे हैं आज हमारे पास ऐसी सेनाएँ हैं जिनके पास आधुनिक अस्त्र शस्त्र हैं। आज हम सूचना प्रद्योगिकी (information -technology) के युग में जी रहे हैं । हमारे पास आधुनिक शिक्षा है। हमने मंगल ग्रह पर अभियान किया है,चंद्र अभियान भी किया है, मिसाइलों का भी सफल परीक्षण किया है,देश की सरकार की बुलेट ट्रेन लाने की भी परिकल्पना है यहाँ तक कि हमारी सरकार ने देश के विकास के लिए 1991 में उदारीकरण और वैश्वीकरण की नीति भी अपनाई थी। आज हमारे देश की शिक्षा-प्रणाली (education system) भी लगभग ऑन लाइन हो चुकी है और आज जो हम देख रहे हैं कि कक्षाओं में बैठ कर छात्रों और शिक्षकों के बीच पठन-पाठन की प्रक्रिया चलती है जिसे अंग्रेज़ी में manual teaching कहते हैं वह भी आने वाले दिनों में समाप्त हो जाएगी। यहाँ यह कहना उचित होगा कि आज के इस करोना काल में पठन-पाठन तो ऑन लाइन के माध्यम से संचालित हो रहा है। कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में ऑन लाइन संगोष्ठियाँ संचालित हो रही हैं। आज पाठ्यक्रम भी

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

ऑन लाइन लाइन प्राप्त होते हैं। साथ ही साथ नगरीकरण की प्रक्रिया भी बढ़ती चली जा रही है। भारत को विकसित राष्ट्र बनाने का प्रयास भी किया जा रहा है। प्रधानमत्री शहरी रोज़गार योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, जन-धन योजना, कन्याश्री (पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा कन्याओं के कल्याण के लिए संचालित योजना) आदि बहुत सारी योजनाएँ हमारी सरकारों द्वारा संचालित की जा रही है।

मित्रों ऊपर वर्णित कथनों के द्वारा आप सोच रहे होंगे कि हमारे देश ने बहुत उन्नति की है । जी हाँ आप सही सोच रहे हैं कि देश प्रगति के मार्ग पर अग्रसर है लेकिन यह अगर उन्नति है तो आज के समाज में महिलाओं पर जो अत्याचार हो रहा है, महिलाएँ ही क्यों छोटे-छोटे बच्चों पर भी अत्याचार किया जा रहा है। क्या यह प्रगति है? क्या यहीं विकास है? क्या यहीं जागरूकता है? निश्चित रूप से इसका उत्तर होगा नहीं। ऐसी बात नहीं है कि केवल महिलाएँ प्रताड़ित होती हैं बल्कि पुरुष भी प्रताड़ित होता है। पुरुष वर्ग महिलाओं को एक वस्तु के रूप देखता है और वह उसे अपने हवस का शिकार बनाता है, आज कल के पुत्र और पुत्रियाँ अपने माता पिताओं को वृद्धाश्रम भेज देते हैं क्या यह उन्नति की निशानी है? क्या यह एक पुत्र का अपने माता-पिता के प्रति अत्याचार नहीं है? क्या एक पुत्री का अपने माता -पिता के प्रति शोषण नहीं है? क्या यहीं उन्नति है ? ऐसा करना क्या एक पुत्र का अपने माता-पिता के प्रति शोषण या अत्याचार नहीं है? सास बहू पर अत्याचार करती है ठीक इसी प्रकार बहू सास पर अत्याचार करती है। कहीं पैतृक सम्पत्ति हेतु माता-पिता की हत्या की जाती है, कहीं दहेज के लिए महिलाएँ उत्पीड़ित होती है क्या यह विकास है? जी हाँ आपने सही कहा कि यह विकास नहीं है।अब इन सब घटनाओं के पीछे मूल कारण पर विचार करते हैं मूल कारण यहाँ हीन मानसिकता है। पुरुष जाति यह भूल चुका है कि नारी जाति माँ होती उनके समक्ष शिशु के समान सरल होना होता है ठीक इसी प्रकार महिलाएँ भी यह भूल गई हैं कि पुरुष वर्ग संतान तुल्य है वे मातृ शक्ति हैं। जाति ब्रह्मचर्य परायण नहीं हो पा रही है और साधक नहीं हो पा रही है सबसे बड़ी बात है कि हम भगवान को ही भूल चुके हैं साथ ही साथ जो पुरुष महिलाओं का शील भंग करते हैं या कहा जाए उनकी आबरू के साथ खिलवाड़ करते हैं उनको यथोचित सज़ा नहीं मिल पाती है। यह समाज उन्हें प्रमाद आदर देता है। अब बात करते हैं इस समस्या के समाधान है की, हमें यह सदैव स्मरण रखना चाहिए कि भारत एक आध्यात्मिक देश है, यह प्राचीन मुनि-ऋषियों की मातृभूमि रही है यहाँ ब्रह्म गायत्री ध्वनित हुई है अतः इस देश की उन्नति आध्यात्मिकता के माध्यम से ही होगी साथ ही साथ संतान जन्म के समय माता-पिता को सद संतान, ब्रह्मज्ञ संतान हेतु प्रार्थना और चिंतन करना चाहिए क्योंकि चिंता में बड़ी शक्ति होती है स्वामी विवेकानंद ने कहा था तुम

जैसा सोचोगे वैसा ही हो जाओगे। यहाँ इस बात के उल्लेख करने का अभिप्राय यह है कि शिशु के जन्म के समय माता-पिता जिस प्रकार का चिंतन करते हैं उसी प्रकार का प्रभाव शिशु के मन में पड़ता है और धीरे-धीरे उसी प्रकार के चिंतन के आधार पर उसका विकास होता चला जाता है। उदाहरण के लिए मान लीजिए मिश्राजी के पुत्र का विवाह ओझाजी की पुत्री के साथ हुआ संतान जन्म के समय मिश्राजी की अगर शूद्र बुद्धि रही और ओझाजी की ब्राह्मण बुद्धि हुई या मिश्रा के पुत्र की ब्राह्मण बुद्धि हुई और ओझाजी के पुत्री की शूद्र बुद्धि हुई तो क्या ब्राह्मण संतान का जन्म होगा,हाँ जाति के दृष्टिकोण से वह ब्राह्मण होगा लेकिन चिंतन के दृष्टिकोण से नहीं। अतः भगवत स्मरण के माध्यम से माता को उपयुक्त क्षेत्र निर्माण का प्रयास करना चाहिए और पिता को उत्कृष्ट बीज निर्माण का प्रयास करना चाहिए। मैं यहाँ बात भारत के उत्थान के क्षेत्र में मूल रूप से ब्रह्मचर्य के भूमिका की बात कर रहा हूँ। कहा जाता है कि ब्रह्मचर्य के माध्यम से ही इस सम्पूर्ण भारत की उन्नति हो सकती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि भारत एक आध्यात्मिक देश है।अब यहाँ बात आती है कि यह तो हम जानते हैं कि ब्रह्मचर्य के माध्यम से देश की उन्नति हो सकती है। परंतु अब बात यहाँ यह है कि ब्रह्मचर्य की साधना किस प्रकार से की जा सकती है ? इस विषय पर बात करते हुए भारत के प्रख्यात साधक अखंडमंडलेश्वर श्री श्री स्वामी स्वरूपानंद परमहंसदेव (भक्तों के श्री श्री बाबामणि) ने कहा है कि "पहला उपाय है सद संकल्प को मन के भीतर प्रबल से प्रबलतर करने के लिए प्रयासशील होना। मनुष्य अभ्यास के फलस्वरूप जो करता है अथवा करना चाहता है, उसे दमन करके चलने का श्रेष्ठ उपाय है तीव्र संकल्प। यह संकल्प सुप्रतिष्ठित नहीं होता, यदि आँखों के सामने ब्रह्मचर्य के आदर्श को न रखा जाए। इसी कारण सर्वदा संसार के श्रेष्ठ ब्रह्मचारियों के जीवन और चरित्र की आलोचना करना चाहिए। इन सद आलोचनाओं के परिणाम स्वरूप मन के भीतर सद होने की आकांक्षा तीव्र से तीव्रतर होता है। ब्रह्मचर्य के साधना का दूसरा उपाय है अपने मन से अकारण भय और आशंका को दूर कर देना। अभी मर जा रहा हूँ , अभी गिर जा रहा हूँ। इस प्रकार की दुर्बलताएँ मनुष्य को बड़े होने में बाधा देती हैं। जो ब्रह्मचर्य की रक्षा करना चाहता है उसे सबल, सुंदर मन लेकर निर्भरता के साथ अपने कर्तव्य को करते रहना चाहिए। संकट बहुल स्थान में भी जिसके मन में आशंका और आतंक नहीं होता, वहीँ हर समय स्वयं को पापों से मुक्त रखकर चल सकता है। अतः मन से आशंका और आतंक को पहले दूर करना चाहिए। संसार के कल्याण के लिए हम सारी संपत्ति बाँट देंगे मन की यह भावना भी ब्रह्मचर्य के पालन में विशेष सहायक है"।[1]

आलोच्य गद्यांश में वर्णित बातों की व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है कि भारतीय आध्यात्मिक चिंतन में ब्रह्मचर्य की एक बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका है। तीव्र संकल्प के माध्यम से ही ब्रह्मचर्य की स्थिति तक पहुँचा जा सकता है। मन की दुर्बलता ब्रह्मचर्य के लिए संकट उत्पन्न कर सकती है। अतः एक ब्रह्मचर्य परायण व्यक्ति को कभी भी

अपने मन को दुर्बल नहीं बनाना चाहिए। दुर्बलता ही विनाश का कारण है। अगर मनुष्य के भीतर कोई बुरी आदत है तो उसे भी वह अपने कठोर संकल्प के माध्यम से दूर कर सकता है। ब्रह्मचर्य परायण व्यक्ति के मन में संसार के कल्याण की कामना होनी चाहिए। संसार के कल्याण की कामना एक महान भावना है। जो संसार के कल्याण के लिए अपने क्षुद्र स्वार्थ का परित्याग कर सकता है वहीं ब्रह्मचर्य का पालन कर सकता है। स्वार्थ का त्याग ब्रह्मचर्य का सहायक होता है। हम देखते है कि श्री श्री बाबामणि ने आलोच्य गद्यांश में निर्भरता की बात कही है। अब यहाँ बात आती है वे किस निर्भरता की बात कर रहे हैं ? यहाँ निर्भरता से अभिप्राय है भगवान के उभर निर्भरता क्योंकि भगवान के ऊपर निर्भरता के माध्यम से ही ब्रह्मचर्य की बुनियाद टिकी रह सकती है।

सम्पूर्ण भारतवर्ष के कल्याण के कल्याण के लिए ब्रह्मचर्य की एक बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। अब बात आती है कि ब्रह्मचर्य को किस प्रकार से एक महान आंदोलन के रूप में सम्पूर्ण देश के कल्याण के लिए फैलाया जा सकता है इस विषय में अखंडमंडलेश्वर श्री श्री स्वामी स्वरूपानंद परमहंसदेव (श्री श्री बाबामणि) कहते हैं कि "यथार्थ ब्रह्मचर्य का आंदोलन आलस्यहीनता का आंदोलन है। ब्रह्मचर्य का शत्रु कौन है ? आलस्य और अवसाद है कि नहीं ? आलसियों का समूह ही क्या अपने मन में बुरी चिंता और बुरी बातों की चर्चा नहीं करता है ? आलस्य क्या गुंडागर्दी का अखाड़ा नहीं है ? दिन के समय जो सोते रहते हैं और रात में जागकर ताश आदि का श्राद्ध करते हैं वे ही क्या दूसरे की नारियों के सतीत्व के हरण में कुमारियों के कौमार्य के उल्लंघन में, विधवा के पवित्रता के विनाश में सबसे पहले उत्साही नहीं होते हैं ? जिनके हाथ में कोई काम नहीं होता वे ही क्या अधिकतर समय समाज के शरीर में कामुकता के कालकूट का विस्तार नहीं करते हैं ? वे ही क्या छोटे-छोटे बच्चों का मस्तक नहीं खाते हैं ? वे ही क्या घर-घर में गुप्त पाप का प्रवेश द्वार नहीं खोलते हैं ? वे ही क्या अधिकांश समय जिसे भाई कहते हैं उसके प्रति साँप की भाँति आचरण नहीं करते हैं ? जिसे बहन सम्बोधन करते हैं उसके प्रति बृश्चिक के समान आचरण नहीं करते हैं ? इसीलिए अगर लम्पटता को अगर दूर करना है तो आज घर-घर में कर्मशीलता की प्रतिष्ठा करना होगा। अतः आज ब्रह्मचर्य आंदोलन को विश्वग्रासिनी कर्म की ऊँची आकांक्षा के ऊपर खड़ा करवाना होगा"।[2]

आलोच्य गद्यांश में वर्णित बातों की व्याख्या करते हुए कहा जा सकता है कि ब्रह्मचर्य आंदोलन का मुख्य उद्देश्य आलस्य का विनाश करना है। मन का जो आलसीपन हैं वहीं ब्रह्मचर्य का शत्रु है। जनता को कर्मशील बनाना होगा। जो लोग अपने कर्मशील समय को व्यर्थ में ही नष्ट कर देते हैं वे ही समाज में अत्याचारी बनते हैं। दूसरे की बहू-बेटियों का शोषण करते हैं। कहा जाता है कि 'ख़ाली दिमाग़ शयतान का घर होता है।' यहाँ भी कुछ ऐसी ही स्थिति है। यहाँ दिन कर्मशीलता और व्यक्ति की ऊर्जा का प्रतीक है। जिस समय मानव के शरीर में ऊर्जा विद्यमान रहती है

उस समय जो सद कर्म किया करते हैं भगवान का स्मरण करते हैं अपनी सम्पूर्ण ऊर्जा को भगवान के कर्म में लगाते हैं वे ही सफल होते हैं। मनुष्य को पहचानना बड़ा ही कठिन होता है। जो किसी को बहन या भाई के रूप में सम्बोधित करते हैं वे ही लोगों के प्रति अत्याचार कर सकते हैं क्योंकि मनुष्य बड़ा ही विचित्र प्राणी है। ब्रह्मचर्य आंदोलन के द्वारा समाज के इस दुष्टतापूर्ण आचरण को समझा जा सकता है। विश्व को ग्रास करने वाली जो कर्म की आकांक्षा है उसे भेद करते हुए उच्च स्तर पर पहुँचना ही ब्रह्मचर्य आंदोलन का लक्ष्य है। यहाँ यहीं बताया गया है कि बुरे कर्मों के विनाश के लिए ब्रह्मचर्य आंदोलन की आवश्यकता है।

अब तक मैं बात कर रहा था ब्रह्मचर्य और कर्म को लेकर कि इसके माध्यम से सद कर्मों का निर्माण होता है और बुरे कर्मों का विनाश होता है। अब इस बात को और थोड़ा सा आगे बढ़ाते है। कर्म की हमारी हिंदू चिंतन में बड़ी ही महत्वपूर्ण भूमिका होती। हिंदू दर्शन के अनुसार व्यक्ति एक क्षण भी अपने कर्म से विचलित नही हो सकता। व्यक्ति को जीवन के प्रत्येक क्षण अपने कर्म में लगा रहना पड़ता है। मनुष्य चाहे गृहस्थाश्रम में रहे या सन्यास आश्रम में। कर्म तो उसे करना ही पड़ता है। अखंडमंडलेश्वर श्री श्री स्वामी स्वरूपानंद परमहंसदेव (श्री श्री बाबामणि) ब्रह्मचर्य आश्रम किस प्रकार होना का होना चाहिए इस पर बात करते हुए कहते हैं कि "ब्रह्मचार्यश्रमों को कर्मयोगाश्रम होना होगा। किस निर्दिष्ट कर्म के माध्यम से आश्रम के विद्यार्थीगण उनके भावी जीवन के कठोरतम व्रतों का पालन करेंगे इसे निर्धारित करना ब्रह्मचर्य विद्यालय का कार्य नहीं है। कारण अपनी-अपनी स्वाधीन विचारधारा, स्वाधीन रुचि के द्वारा ब्रह्मचारीगण यथासमय यह स्वयं ही ठीक कर लेंगे। इसलिए हमें माथापच्ची करने की कोई आवश्यकता नहीं है। ब्रह्मचर्य विद्यालय का वास्तविक कार्य है समस्त कर्मों में भगवान के जुड़ाव को अनुभव करना। इस कौशल को प्रत्येक ब्रह्मचारी को सीखना होगा"।[3]

आलोच्य गद्यांश में वर्णित बातों की व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है ब्रह्मचर्य का मूल उद्देश्य लोगों भगवत परायण करते हुए भगवान के कर्म की ओर आकृष्ट करना। सर्व वस्तु में या सर्व भाव में छात्रों को भगवान का दर्शन कराना ही ब्रह्मचर्य विद्यालय का कार्य है। यहाँ कहा जा रहा है कि ब्रह्मचर्य विद्यालय से शिक्षा ग्रहण करने के छात्र अपनी अभिलाषा के अनुसार किसी भी प्रकार की सद आजीविका अपने जीवन को संचालित करने हेतु ग्रहण कर सकता है वह देश के लिए सैनिक बन सकता है। या कोई विद्यार्थी किसी कार्यालय में क़लम चलाने की नौकरी कर सकता है।इसके लिए वह स्वतंत्र है।कोई छात्र ऐसा भी हो सकता जो आश्रम में रहकर एक ब्रह्मचारी का जीवन बिता सकता है। किंतु बात यहाँ यह है कि जो विद्यार्थी आश्रम के ब्रह्मचर्य विद्यालय से शिक्षा ग्रहण करके देश की रक्षा के लिए रणभूमि में बंदूक़ चलाकर अपने देश को शत्रुओं से बचाने युद्ध करने हेतु सैनिक बना हो उसे बंदूक़ की प्रत्येक गोली की आवाज़ में भी ब्रह्म दर्शन करते रहना चाहिए। ठीक इसी प्रकार जिस विद्यार्थी को किसी कार्यालय में कलम चलाने की नौकरी मिली हो उसे भी कागज में कलम संचालन की ध्वनि में दवात की सियाही में उसे परमब्रह्म का दर्शन करना चाहिए। यहीं बात उस विद्यार्थी के लिए भी लागू होती है जो ब्रह्मचर्य विद्यालय की शिक्षा ग्रहण करते हुए

ब्रह्मचारी बनकर अपना जीवन संचालित करना चाहता है। मूल बात यह है कि ब्रह्म को प्राप्त करने के लिए जिस प्रकार के आचरण की आवश्यकता होती है ब्रह्मचर्य विद्यालय में सभी विद्यार्थियों को यहीं शिक्षा दी जाती है।

अब हम बात उस विषय के बारे में बात करते हैं कि ब्रह्मचर्य आश्रम किन व्यक्तियों का निर्माण करेगा इस विषय में अखंडमंडलेश्वर श्री श्री स्वामी स्वरूपानंद परमहंसदेव (श्री श्री बाबामणि) कहते हैं कि "देश तो मनुष्य चाह रहा है। देश ऐसे मनुष्यों को चाह रहा है जो उनकी समस्त शक्तियों को किसी एक कार्य के लिए जगा सकते हैं। कार्य में हाथ डालने से जिसकी शक्ति का एक कण भी सोया हुआ नहीं रह सकता। जिसका एक सामर्थ्य भी कुंठित होकर नहीं लौटता। ऐसे ही उन्नत और वज्र के समान तेजस्वी कर्मियों को आज देश चाहता है। लेकिन यदि उसका सामर्थ्य दो दिन श्रम करने के उपरांत क्लान्त हो जाए तो ? जीव की शक्ति तो सिमाबद्ध है। अतः ऐसे वज्र की आवश्यकता है जिसका विद्युत तोड़ी सी आँखें दिखाने से ही विलीन नहीं हो जाता है परंतु वज्र के साथ निवास कर चिर-अविनाश्वर हो जाता है। इसीलिए बाल-ब्रह्मचारी की आवश्यकता है। शक्ति रूपी भगवान के साथ नित्त जुड़ाव की व्यवस्था और दीर्घकालीन त्याग स्वीकार की पद्धति का अनुशीलन को सम्भव बनाने की अनुकूल व्यवस्था करना। जो ब्रह्मचर्य आश्रम इतना कर पाएगा एक आश्रम के रूप में परिचय देना उसी का अधिकार होगा"।[4]

आलोच्य गद्यांश में वर्णित बातों की व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है कि आज देश की माँग ऐसे त्यागी पुरूषों की है। जो किसी एक महान कार्य में स्वयं को सम्पूर्ण रूम से समाहित कर सके। जो कार्य से कुंठित होकर अपनी एक कण शक्ति को भी वापस नहीं लौटा ले जाएँगे। ब्रह्मचर्य आश्रम ऐसे ही त्यागी मनुष्य का निर्माण करेगा। ब्रह्मचर्य की शिक्षा बालपन से ही देने की आवश्यकता है। बाल-मन को परम ब्रह्म के प्रेम और भक्ति की दिशा में सहजता से ले जाया जा सकता है।ब्रह्मचर्य आश्रम ऐसे लोगों का निर्माण करेंगे जो भगवान के जीव के नित्य सम्बंध को समझ पाएँगे। यह ऐसे लोगों का समुदाय होगा जिनका कभी भी विनाश नहीं होगा और भगवत प्रेरित किसी महान कार्य को सम्पन्न करने के लिए इनकी उपस्थिति सदा बनी रहेगी। यहाँ कहा जा रहा है कि वे वज्र के साथ निवास करेंगे। यहाँ वज्र शब्द अन्याय, अत्याचार और दुष्टता के दमन की शक्ति का प्रतीक है। अर्थात् कहने का अभिप्राय यहाँ यह है कि ब्रह्मचर्य आश्रम ऐसे लोगों का निर्माण करेगा जो समाज में हो रहे अन्याय, अत्याचार और शोषण का विरोध अपनी भगवत शक्ति के माध्यम से करेंगे और संसार एक शांतिधाम में परिणत होगा।

ब्रह्मचर्य के साथ स्वदेश सेवा की भी बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका है। हिंदू आध्यात्मिक चिंतन में स्वदेश को भी ब्रह्म का स्वरूप में ही देखा गया है। एक जिज्ञासु ने जब श्री श्री बाबामणि से यह पूछा कि स्वदेश की सेवा के माध्यम से क्या ब्रह्मचर्य की प्राप्ति हो सकती है ? इस प्रश्न के उत्तर में श्री श्री स्वामी स्वरूपानंद परमहंसदेव (श्री श्री बाबामणि) ने जो कुछ कहा है वह इस प्रकार है "क्यों नहीं किया जा सकता है ? अगर प्रेम के माध्यम से स्वदेश की सेवा की जाए तो सारे अब्रह्मचर्य स्वयं ही दूर जाते हैं। स्वयमेव चित्त की शुद्धि होती है। प्रेम प्रेम मानवता प्रदान करती है। जिस प्रकार से देश की सेवा करने से तुम्हारे प्रेम में वृद्धि होगी, यह जानकर रखो कि वहीं तुम्हारे ब्रह्मचर्य का सहायक है।प्रेम का क्या मतलब है ? आसक्ति नहीं। प्रेम का अर्थ स्वार्थ बुद्धिहीन अहेतुक अनुराग। देश की सेवा करना क्यों अच्छा लगता है जब इसका कारण नहीं खोज पाओगे तब यह जानो कि देश के प्रति प्रेम हो गया है। पहले ऐसा होगा कि तुम्हारे मन में देश सेवा की प्रवृत्ति किसी कारण को आधार बनाकर ही बनाकर ही जागेगा। किंतु देश-सेवा के साथ नि: स्वार्थता का अनुशीन करने की चेष्टा करने से देश के प्रति अहेतुक अनुराग का जन्म होगा, तभी जानोगे तुम्हारे देश-सेवा का व्रत सार्थक होने जा रहा है। तुम्हारा ब्रह्मचर्य भी सुप्रतिष्ठित होने के मार्ग में आ गया। दिन-रात देश की मंगल कामना में स्वयं को व्यस्थ रखो, और रात में सोने का समय आने पर भगवान के श्री चरणों में स्वयं को समर्पित कर दो"।[5]

आलोच्य गद्यांश के आधार पर यहीं कहा जा सकता है कि देश सेवा के माध्यम एक सेवक तो तभी ब्रह्मचर्य की प्राप्ति होगी जब उसके मन में स्वार्थ की भावना नहीं होगी। इस सेवा के माध्यम से किसी भी प्रकार की निजी लाभ की भावना नहीं होगी। मन में केवल यह भावना रहेगी कि इस देश की संतान होने के नाते इसकी सेवा करना मेरा कर्तव्य है। साथ ही साथ देश की सेवा करने वाले व्यक्ति को पूर्ण रूप से भगवान के प्रति समर्पित होना होगा।

आज हम ऐसे युग में जी रहे हैं जिस समय विभिन्न जातियों, धर्मों और भाषाओं के प्रति मनुष्य हिंसक हो चुका है। चारों तरफ़ मार-काट और दंगे हो रहे हैं। ऐसी परिस्थिति में ब्रह्मचारी को दूसरी जातियों, धर्मों या पंथों के प्रति असहिष्णु नहीं होना चाहिए। ब्रह्मचर्य हमें सर्वधर्म समभाव और सहिष्णुता की शिक्षा प्रदान करता है। ब्रह्मचर्य और सहिष्णुता के विषय में बात करते हुए श्री श्री बाबामणि कहते हैं कि "विश्वग्रासिनी ऊँची आकांक्षा के साथ-साथ परमत में सहिष्णुता।"साथ ही साथ वे यह भी कहते हैं कि "वीर्य धारण ही ब्रह्मचर्य का प्रमाण है"।[6]

आलोच्य गद्यांश में अन्य पंथों, मतों आदि के प्रति सहिष्णुता की भावना के साथ ही वीर्य धारण की शक्ति को भी ब्रह्मचर्य के लिए आवश्यक बताया गया है।

ब्रह्मचर्य आश्रम जातिभेद विषय में श्री श्री स्वामी स्वरूपानंद परमहंसदेव (श्री श्री बाबामणि) से जब एक जिज्ञासु ने पूछा कि "क्या आप लोग आश्रम में जाति प्रथा को रखेंगे तो उन्होंने कहा कि "जतिभेद नहीं, श्रेणी भेद रखा जाएगा। ब्रह्मचारी और अब्रह्मचारी की श्रेणी"।[7]

निष्कर्ष :-

जाति अगर तपस्यपरायण और ब्रह्मचर्य परायण होगी तभी इस देश में देव मानव का आगमन होगा। यह कोई कल्पना नहीं बल्कि यथार्थ है। स्कूलों, कालेजों के पाठ्यक्रम में याज्ञवलक्य, गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा आदि की पवित्र चरित गाथाओं को लागू करना चाहिए तब तथाकथित पुरुष वर्ग जो नारी समाज को हीन मानता है उसे भी इस बात का बोध होगा कि ज्ञान और योग्यता में नारी भी निकृष्ट नहीं है। मुझे यह भी लगता है कि जो पुरुष महिलाओं की आबरू के साथ खिलवाड़ करते हैं उन्हें हमारे समाज में दामाद आदर देना बंद करना चाहिए और मृत्यु दंड देना चाहिए। साथ ही साथ ब्रह्मचर्य के बारे में जिन विचारों को व्यक्त किया है हमें उस पर अमल करने का प्रयास करना होगा तभी देश का वास्तविक अभ्युदय होगा।

संदर्भ :

1. आलोच्य कथन में श्री श्री स्वामी स्वरूपानंद परमहंसदेव ने ब्रह्मचर्य साधना के उपायों की बात की है। उनका यह दीर्घ कथन ॐ अखंड-संहिता अथवा श्री श्री अखंडमंडलेश्वर श्री श्री स्वरूपानंद परमहंसदेव की उपदेश वाणी नामक पुस्तक के दूसरे खंड की पृष्ठ संख्या, 385, में वर्णित है। यह पुस्तक समय-समय पर अपने शिष्यों, भक्तों आदि को विभिन्न विषयों पर समय-समय पर दिए गए उपदेशों, विभिन्न अवसरों पर दिए गए भाषणों एवं लिखे गए पत्रों संकलन है। इस पुस्तक के कुल चौबीस खंड हैं। इस आलेख के लिए दूसरे खंड को आधार बनाया है।
2. उपरिवत, पृष्ठ संख्या, 160 आलोच्य पृष्ठ में उन्होंने ब्रह्मचर्य आंदोलन और कर्म के विषय में बताया है।
3. उपरिवत पृष्ठ संख्या, पृष्ठ संख्या,161 और 162 ब्रह्मचर्य आश्रम कर्म-क्षेत्र है।
4. उपरिवत पृष्ठ संख्या, 162 और 163 मानव निर्माण की बात
5. वहीं पुस्तक, पृष्ठ संख्या, 82
6. उपरिवत, पृष्ठ संख्या, 385, सहिष्णुता
7. उपरिवत, पृष्ठ संख्या, 271